Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 69-70, Jan-Feb 2021

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 69-70, जनवरी-फरवरी 2021

जनमत निर्माण में नारों की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (भारतीय चुनाव के विशेष संदर्भ में)

डॉ. शिवेंद्र मिश्रा,
सहायक प्राध्यापक
जागरण लेकसिटी विश्वविद्यालय, भोपाल म.प्र

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन भारतीय लोकतंत्र में जनमत निर्धारण हेतु प्रयुक्त नारों पर केन्द्रित है। लोकतांत्रिकदेशष में किस तरह नारे विशेषकर चुनाव में जनमत का निर्माण करते हैं। लोकतंत्र की अवधारणा में ही जनमत का संदेश है। किसी भी लोकतांत्रिक देश में बिना जनमत निर्माण के राष्ट्र की परिकल्पना ही नहीं की जा सकती हैं। भारतीय संदर्भ में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 के समय से ही नारे लोगों को राष्ट्रभक्ति के लिए प्रेरित करते रहे है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय से भी नारों की सार्थकता रही। स्वतंत्रता के बाद राजनीतिक दलों द्वारा लोकसभा चुनाव से लेकर राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों में नारों का प्रयोग अविस्मरणीय रहा। चुनावी नारों जहां एक ओर जनमत निर्माण का कार्य करते है, वहीं दूसरी ओर नारों का प्रचलन उस समय की राजनीतिक व समाजिक परिदृष्य की ओर भी रेखांकित करती है। प्रस्तुत अध्ययन भारतीय लोकतंत्र में हुए चुनाव में नारों पर केन्द्रित है। अध्ययन का विषय यह भी है, कि किस तरह लोकतंत्र के पर्व चुनाव में नारों का महत्व है और किस प्रकार राजनीतिक दल नारों के माध्यम से जनमत का निर्माण करते है।

की वर्ड- *लोकतंत्र, चुनाव, नारे, जनमत।*

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही प्रायः सभी देषों में विभिन्न षासकों ने अपने सम्राज्य पर नियंत्रण रखते थे । एशिया , अफ्रीका , लैटिन अमेरिका सहित दुनिया के सभी सभ्यताओं में यह स्वरुप देखने को मिला । प्राचीन ग्रीक दार्शनिक प्लेटो ने ‘‘दार्शनिक राजा ‘‘ का सिद्वान्त प्रतिपादित किया । इस प्रकार अधिकतर प्राचीन चिंतकों ने शक्तिशाली राजा का समर्थन किया, इसकी तुलना में नागरिक सहभागिता का विचाार उपेक्षित सा रहा । मध्य युग में इटली के दार्शनिक मेंकियावली ने द प्रिन्स नामक पुस्तक में शासक को सत्ता के लिए सभी विकल्पों के प्रयोग तक के लिए अनुमति दे डाली । इस प्रकार अधिकतर समाजों में प्रभुत्ववादी य अधिनायकवादी व्यवस्था ही प्रभावी थी। राजषाही व्यवस्था के बाद लोकतांत्रिक ब्यवस्था की स्थापना हुई। इस लोकतांत्रिक ब्यवस्था में देश का राजनीतिकरण हुआ और चुनाव के द्वारा जनप्रतिनिधि के चयन की प्रक्रिया सुनिश्चित की गई।

विश्व में राजब्यवस्था पर पूर्ण रुप से राजाओं का ही प्रतिनिधित्व रहा। इसी क्रम कई प्रभावशाली देशों ने आर्थिक व समाजिक रुप से पिछडे देशों पर अधिकार कर लिया। लंबे संघर्षो के बाद ये देश अपने आजादी के लिए संघर्ष किया और अन्ततः आजाद हुए । अमेरिका में 1765 के दौर पर अमेरिकी

स्तम्भकारों ने भी अपने आंदोलन के जरिए ‘‘प्रतिनिधित्व के कर तानाशाही’’ का नारा दिया। प्रत्येक देश का अपना समाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक ढांचा होता है, सरकार का स्वरुप और भूमिका समाज और सरकार से उसका संबंध किस प्रकार है, यह उनको संबंधों पर निर्भर करता है। लोकतंत्र के साथ ही राजनीति को सुदृढ़ बनाने में नारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

शोध का उद्देश्य-

- भारतीय चुनाव में प्रयुक्त नारों का अध्ययन करना।
- चुनावी नारों द्वारा जनमत प्रभाव पर अध्ययन करना।

विश्लेषण एवं व्याख्या-

भारतीय स्वतंत्रता व नारों का अंतर्संबंध

भारतीय स्वतंत्रता का संघर्ष मुख्यतः 1857 की क्रांति से शुरुआत से होती है। इससे पूर्व भी ब्रिटिश सरकार के तानाशाही के विरुद्व आवाज बुलंद होने लगे थे। अंग्रेजों के विरुद्व क्रांति की शुरुआत करने वाले मंगल पाण्डेय ने ‘‘मारो फिरंगी को’’ का नारा दिया जो 1857 क्रांति का महत्वपूर्ण भाग रहा है। 1857 की क्रांति का नारा भी काफी प्रेरणास्त्रोत रहा ‘‘मैं झांसी नहीं दूंगी’’। इसके आर्य समाज की स्थापना करने वाले दयानंद सरस्वती ने 1875 ‘‘ वेदों की तरफ लौटो’’ का नारा दिया जो उस समय फैले अंधविश्वास व कर्मकांड को हटाना था। इसका मुख्य उद्देश्य समाजिक सुधार के क्षेत्र में छूआछूत और जन्म के आधार पर जाति प्रथा की आलोचना प्रमुख था।

नारों का केन्द्र बिंदु विभिन्न संगठनों की स्थापना व आंदोलन भी रहे। भारतीय स्वतंत्रता में आंदोलन की भूमिका महत्वपूर्ण रही है, वहीं दूसरी ओर नारों का प्रभुत्व भी रहा है। नारों ने एक नवजीवन का संचार किया है, वहीं दूसरी ओर क्रांति की ओर हमें प्रेरित किया। बालगंगाधर तिलक ने लोगों से इस स्वतंत्रता के यज्ञ में आहुति देने के लिए उन्होंने ‘‘स्वराज्य मेरा जन्मसिद्व अधिकार है ! और मैं इसे लेकर रहूँगा’’ का नारा दिया। ये नारा व्यापक जनसंपर्क के द्वारा गणपति उत्सव व शिवाजी का उत्सव के माध्यम से जन जन तक पहुंचाया।

1905 में जब लार्ड कर्जन के प्रतिनिधित्व में बंगाल का विभाजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य हिंदू-मुसलमानों के बीच खाई को बढ़ाना और प्रेस के प्रभाव को कम करना था। इसी कारण 16 अक्टूबर 1905 को शोक दिवस के रुप में मनाया। फेडरल हाल में आयोजित बैठक में ‘‘वंदे मातरम’’ का नारा दिया गया। वंदे मातरम की पक्तियों में भारतीय राष्ट्रवाद की गहराई छुपी हुई है, राष्ट्र के प्रति असीम समर्पण की अनन्य अभिव्यक्ति देखने को भी मिलती है। ऐसा समर्पण और ऐसी आस्था जिसके एवज में किसी तरह

की आकांक्षा नहीं थी, जो पूरी तरह बिना शर्त और स्वतः स्फूर्त है। वंदे मातरतम गीत होते हुए भी यह स्वाधीनता संग्राम का नारा बन गया। इसके अतिरिक्त भी क्रांतिकारियों ने इंकलाब जिंदाबाद, भारत माता की जय, जय हिंद के अतिरिक्त अंग्रेजो भारत छोड़ों नारे प्रेरणास्पद रहे। जिनकी प्रसांगिकता आज भी बनी हुई है। ये नारे अधिक लंबे कालखंड तक अधिक विसतृत भू-भाग तथा अधिक व्यापक अर्थो में देखा गया। स्वाधीनता संग्राम में हिस्सा लेने वाले अलग-अलग विचारधाराओं के लोगों ने इसे अपनाया था। चाहे वो कांग्रेस हो , हिन्दुवादी संगठन ये नारे इनके जयघोष होते थे तो वहीं क्रांतिकारियों ने इसे युद्वघोष का रुप दे दिया।

जय हिन्द व भारत माता की जय का नारा

भारत का स्वतंत्र होना सहज बात नहीं थी। इसमें योगदान हमारे वीरों , क्रांतिकारियों के साथ उस समय के जनमत नेताओं की है, जिनके कारण आज हम स्वतंत्र है। जब वो हिन्दी के नारे ‘‘ जय हिन्द’’ व “भारत माता की जय” जो आज भी राष्ट्रीय पर्व सहित कई सार्वजनिक कार्यक्रमों में ये नारे गूंजते रहते है। स्वाधीनता संग्राम के दौरान कई नारों से देश की जनता का आहवनान किया, जिससे वे आजादी की लड़ाई जीत सके।

इंकलाब जिंदाबाद - ये नारा भारतीय स्वतंत्रता का घोतक बन गया ,इस नारे की जयकार सुनकर अंग्रेजी हूकूमत की पसीने निकल आते थे। ये नारा मुख्य रुप से क्रांतिकारियों ने अपनाया था। क्रांतिकारी भगत सिंह के इस नारे ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ देश भर में आजादी की चिनगारी सुलगा दी थी इस नारे को चंद्रशेखर आजाद, राजगुंरु जैसे इंडियन सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के क्रांतिकारी प्रयोग करते थे। इस नारे को सर्वप्रथम लांग क्रांति लाइव के रुप में कलकत्ता के मौलाना हसरत मोहानी ने प्रयोग किया। भगत सिंह ने देश की आवाम को नारों के माध्यम से एकजुट करने का प्रयास किया। क्रांतिकारियों में हौसले व देश प्रेम के प्रेरित करने के लिए भगत सिंह ने ‘‘सम्राज्यवाद का नाश हो’’ का नारा दिया जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों को यहीं संदेशित करने के लिए थे कि वो अंग्रेजी हूकूमत को नेस्तानाबूत कर दे। मुण्डकोपनिषद से लिया गया ये वाक्य ‘‘सत्यमेव जयते’’ जो आज हमारी राष्ट्रीय अस्मिता है। इसके भी मदनमोहनमालवीय ने सर्वप्रथम नारा दिया। वे हिन्दुस्तान में विदेशी राज के खिलाफ थे। भारतीय प्राचीन ग्रंथ उपनिषद से लिया गया ये आदर्श वाक्य आजादी के बाद राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया।

“भारत छोड़ों आंदोलन” - महात्मा गांधी जिन्हे संपूर्ण विश्व में अहिंसा के पुजारी के रुप में प्रतिबिंबित किया जाता है, उन्होने भी अपने संदेश को जन-जन तक पहुचाने के लिए नारों का भरपूर प्रयोग किया है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिन्दी नारों के सहारे ही भारतीय आवााम को एक सूत्र में बांधने की कोशिश की। असहयोग आंदोलन से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन तक नारों ने ही तो जन-जन को एकजुट किया। 8 अगस्त 1942 को ‘‘भारत छोड़ों आंदोलन’’ में अंग्रेजों भारत छोड़ों का नारा दिया, जिससे

अंग्रेजी हुकूमत सहम उठी । इस दौरान सबसे लोकप्रिय नारा हुआ करो या मरो दिया। जिसका प्रथम व अंतिम उद्देश्य अंग्रेजी सम्राज्यवाद को हटाना था।

''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा'' -सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज का गठन किया, जिसके फौजी एक दूसरे को जय हिन्द कहकर संबोधित करते थे। ये नारा उस समय भी आम जन को राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत करने के लिए काफी थी और आज भी आजादी के बाद भी जय हिंद की अलग प्रसांगिकता बनी हुई है। इस सर्वप्रथम सुभाष चन्द्र बोस ने 2 नवबंर 1941 में प्रयोग किया। बाद में भारत सरकार ने इसे राष्ट्रीय नारा घोषित किया। बोस ने राष्ट्रीय प्रेम की पराकाष्ठा को पार करते हुए और नारे भी दिए जिन्होने उस समय एक नया सूत्रपात किया ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा'' । इस नारे लोगों को आंदोलित कर दिया और पहली बार लोगों को उद्वेलित किया कि बिना क्रांति के आजादी असंभव है। इसी समय बोस ने एक और नारा दिया जो काफी लोकप्रिय रहा दिल्ली चलो।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री और सर्वाधिक समय तक प्रधानमंत्री रहे पं जवाहर लाल नेहरु ने दो नारे दिए जो भारतीय स्वतंत्रता के प्रेरणास्त्रोत रहे जिसमें एक था ''पूर्ण स्वराज'' की मांग तो वहीं दूसरी ओर ''आराम हराम'' थी। देश के पहले गृहमंत्री रहे व लौहपुरुष के नाम से विख्यात बल्लभ भाई पटेल ने ''कर मत दो'' का नारा देकर अंग्रेजी हुकूमत को पेरशानी में डाल दिया था। लाला लाजपत राय ने भी साइमन कमीशन का विरोध में ''साइमन कमीशन वापस जाओ'' का नारा दिया, जो अंग्रेजी शासन का विरोध करने के लिए आदर्श वाक्य बना।

भारतीय स्वतंत्रता के बाद व चुनावों में नारों का प्रभुत्व व प्रभाव -

भारतीय स्वतंत्रता के मिलने के बाद जहां एक ओर बटवारे का तांडव था वहीं एक व्यवस्थित गणतंत्र की मंाग भी पहली प्राथमिकता थी। भारतीय स्वतंत्र नागरिक को गणतंत्र नागरिक बनाने में संविधान का निर्माण अनिवार्य था। अन्ततः 26 नवबंर 1949 मिती मार्ग शीर्ष शुक्ल सप्तमी को हमारे संविधान का निर्माण हुआ। संविधान हमारे देश की गीता भी है, कुरान भी है, जो भारतीय जनता को समर्पित है। हमारे संविधान की प्रास्तवना में ''हम भारत के लोग'' शब्दों का प्रयोग हमारी एकता की परिचायक तो वहीं इसका अंतिम लक्ष्य या प्रारब्ध हमारी स्वतंत्रता व विकास ही है।

संविधान के बाद संसद से लेकर सड़क तक अपनी मांगों और सरकार के विरोध में नारे लगते रहे है, तो वहीं दूसरी ओर राजनीतिक पार्टियों ने भी नारों का जमकर प्रयोग किया। नारों ने कहीं सरकार उखाड़ दिए तो कहीं जागरुकता की पराकाष्ठा कर दी। नारों ने हमें जनमत नेता भी दिए। राममनोहर लोहिया, जयप्रयकाश नारायण, अन्ना हजारे , अरविंद केजरीवाल ने भी नारों का जमकर प्रयोग किया। कहीं सरकार

के खिलाफ तो कहीं भारतीय संवैधानिक व्यवस्था को सुदृढ करने के लिए। हिन्दी नारों का व्यापक प्रयोग कर कहीं जनमत का निर्माण हुआ तो कहीं जागरुकता का संचार हुआ।

आजादी के बाद समाजवाद की मांग व नारों का प्रभाव -

1962 में नेहरु ब्यवस्था के दिन गुड इवनिंग के रुप में बदलने लगे। तब ही राममनोहर लोहिया ने गैर कांग्रेसवाद का आहवाहन किया, और कहा कि सब लोग मिलकर देश को लडखड़ाने से बचाए। लोहिया ने राष्ट्र की अस्मिता और स्वाभिमान के लिए ‘‘हिमालय बचाओ’’ का नारा दिया। ऐसे दौर में नकारात्मक नारे के प्रादुर्भाव की बात हुई इससे पहले अंग्रेजो भारत छोड़ो को भी नकारात्मक नारा की संज्ञा दिया। लोहिया के जो गलत बात लगती तो आवाज उठाते थे आंदोलन करते थे। अगर प्रभाव पैदा करना है, तो कुछ तल्ख बोलना जरुरी है। वे अंग्रेजी भाषा के खिलाफ लड़ने के लिए जाने जाते थे। उनका मानना था कि अगर हम अपनी शिक्षा दीक्षा अंग्रेजी भाषा में करेंगे तो अपने मूल विचार, दर्शन ओर अस्मिता उभर कर नहीं आ पाएगी। उनका नारा जो प्रसिद्व था कि ‘‘ जिंदा कौमे पांच साल का इंतजार नहीं करती’’। ‘‘भारत छोड़ो आंदोलन के समय’’ ‘‘ना हत्या ना चोट’’ का नारा भी दिया , जो अहिंसा का घोतक था। डॉ. लोहिया का नारा जिसने सरकार के अन्याय के विरोध में कहा ‘‘ अन्याय को बर्दाश्त नहीं करेंगे मारेंगे भी नहीं मानेंगे भी नहीं’’। पिछड़ों को सत्ता में पर्याप्त भागीदारी देने के लिए लोहिया का वह नारा आज भी याद किया जाता है... संसोपा ने बांधी गांठ , पिछड़े पावचे सौ में साठ’’ इस नारे ने पिछड़ों को एकजुट करने में अहम भूमिका निभाई है।

समाजवादियों और साम्यवादियों की ओर से 1960 के दशक में ‘‘धन और धरती बंट के रहेगी , भूखी जनता चुप ना रहेगी’’ के नारे प्रमुखता से रहे। 1962 में भी वैश्विक शांति के प्रयास के लिए जवाहर लाले नेहरु ने हिन्दी चीनी भाई- भाई का नारा दिया। भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने लोगों को भारतीय प्रेम की ओर आकृष्ठ करने के लिए ‘‘जय जवान जय किसान’’ का नारा दिया जो लोकप्रिय भी हुआ और देश का मनोबल भी उंचा किया।

आम चुनाव व आपातकाल के दौरान नारों की प्रासंगिकता-

चुनाव में सार्थक नारे सदैव ही जनमत का निर्माण करने में महती भूमिका निभाते रहे है। भारत की चुनावी राजनीति में नारों ने हमेशा ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। 1971 के आम चुनाव में भी इंदिरा गांधी का नारा गरीबी हटाओं लोगों की जुबान पर था। इंदिरा जी का कहना था, कि‘‘वो कहते है इंदिरा हटाओं मैं कहती हूँ गरीबी हटाओं’’। इस नारे ने अद्भुत जनाधार बनाया। एक नारा और प्रभावी हुआ ‘‘गरीबी हटाओ, इंदिरा लाओ देश बचाओ’’ आजादी के बाद कम्यूनिस्टों ने एक नारा दिया ‘‘ देश की जनता भूखी है यह आजादी झूठी है’’। इस दौर में कांग्रेस के विरोध में जनसंघ का नारा था ‘‘जली झोपड़ी भागे बैल यह देखों दीपक का खेल’’। इसका करारा जवाब कांग्रेस ने नारा दिया ‘‘इस दीपक में तेल नहीं सरकार

बनाना खेल नहीं" आपातकाल के दौरान इंदिरा सरकार के विरोध मेंजननायक जयप्रकाश नारायण ने नारा दिया जो काफी लोकप्रिय रहा ''सिंहासन खाली करो कि जनता आती है"। इसके साथ ही इस नारे क्रांति ला दी और इंदिरा सरकार को जाना पड़ा '' सम्पूर्ण क्रांति अब नारा है" भावी इतिहास तुम्हारा है। इसी समय व्यक्ति विशेष नारा आया जिसमे कांग्रेस अध्यक्ष बरुआ ने कहा '' इंदिरा ही भारत है, भारत ही इंदिरा है"। आपातकाल के दौरान समाजवादियों द्वारा नारा दिया गया वह भी महत्वपूर्ण व प्रभावी रहा ''अंधकार में तीन प्रकाष गांधी, लोहिया और जयप्रकाश"।

आपातकाल के बाद नारों की श्रृखंला-

आपातकाल के बाद नारों न जनमत निर्माण के साथा भावी भविष्य की संकल्पना को साकार करने में लग गए। आपातकाल व संजय गांधी के विरोध में नारा दिया गया- ''जमीन गई चकबंदी में , मकान गया हठबंदी में, द्वार खड़ी औरत चिल्लाए , मेरा मर्द गया नसबंदी में" इस समय एक नारा चला कांग्रेस के विपक्ष में नसबंदी के तीन दलाल इंदिरा , संजय, बंशीलाल । आपात काल के बाद आम चुनाव में इंदिरा गांधी पर कटाक्ष करता हुआ अटल बिहारी वाजपेयी का नारा प्रासंगिक था ''बेटा कार बनाता माँ बेकार बनाती"। एक और नारा कटाक्ष करता हुआ दिया ''ये देखो इंदिरा का खेल खा गई शक्कर पी गई तेल। इसी समय नारा ''नाम बहुगुणा , भ्रष्टाचार सौ गुणा" हेमवती नंदन बहुगुणा पर केन्द्रित था जब वो उत्तर प्रदेश की तत्कालीन मुख्यमंत्री थी। 1978 में हुए लोकसभा चुनाव में इंदिरा गांधी के लिए श्री कांत वर्मा द्वारा दिया गया नारा जब वो चिकमंगलूर को संबोधित कर रही थी '' एक शेरनी सौ लंगूर चिकमंगलूर भाई चिकमंगलूर! भी प्रभावी रहा।

जनता सरकार की मांग इंदिरा के विरोध में नारा '' जगजीवन राम की आई आंधी , उड़ जाएंगी इंदिरा गांधी , आकाश से कहें नेहरु पुकार मत कर बेटी अत्याचार। जनता पार्टी की सरकार से त्रस्त जनता ने फिर इंदिरा जी को चुनने के लिए नारा दिया ''आधी रोटी खाएंगे इंदिरा जी को लाएंगे" इसके बाद इंदिरा गांधी की निधन के बाद नारा दिया जिसने राजीव गांधी को अभूतपूर्व सफलता दिलाई ''जब तक सूरज चांद रहेगा इंदिरा तेरा नाम रहेगा" इस नारे ने भारतीय आवाम को भावनात्मक रुप से अपनी ओर आकर्षित किया । राजीव गांधी के समय ही नारा लोकप्रिय हुआ ''पानी में और आंधी में विश्वास है राजीव गांधी में"। 1989 में वीपीसिंह सरकार के लिए जनता पार्टी का नारा था राजा नहीं फकीर है देश की तकदीर है। इस नारे के पलटवार थां ''फकीर नहीं राजा है सी आई ए का बाजा है"

लोकतंत्र में नारों की प्रासंगिकता बनी ही रही है अगामी चुनाव में राजीव गांधी की हत्या के बाद ''राजीव तेरा यह बलिदान याद करेगा हिन्दुस्ताान" प्रभावी रहा। इसी समय भाजपा की ओर से नारा लगाया गया '' रामलला हम आएंगे मंदिर वहीं बनाएंगे" जो भाजपा का जनमत बनाने की मजबूत नारा साबित हुआ। 1999 के लोकसभा चुनाव में ''बारी-बारी सबकी अबकी बार अटल बिहारी" के साथ ''जांचा, परखा,

खरा" प्रभावशाली नारे रहे। अटल बिहारी को प्रधानमंत्री बनने में नारों की भूमिका महत्वपूर्ण रही अबकी बारी अटल बिहारी। 2004 के लोकसभा चुनाव में भाजपा द्वारा संप्रेषित नारा ''शायनिंग इंडिया'' का नारा भी लोकप्रिय नहीं हुआ। एक और नारा भी इस समय लोकप्रिय हुआ कहो ''दिल से अटल फिर से''। इंडिया शाइनिंग नारे से भाजपा को कोई खास लोकप्रियता नहीं मिली । 2004 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने नारा दिया था ''कांग्रेस का हाथ, आम आदमी के साथ''इसी तरह 2009 में ''जय हो'' नारे ने कांग्रेस का अभूतपूर्व सफलता दिलाई। रायबरेली में सोनिया गांधी की जीत के लिए ''सोनिया नहीं आंधी है, दूसरी इंदिरा गांधी है। भाजपा द्वारा 2007 में उत्तरप्रदेश चुनाव में भी नारा भयमुक्त समाज फेल हो गया। 2004 में कांग्रेस ने नारा दिया कांग्रेस का हाथ आम आदमी के साथ इसके बाद 2009 में दिया आम आदमी के बढ़ते कदम । इन नारों ने कांग्रेस को जीत दिलाई। 2014 पर कांग्रेस का नारा हर हाथ शक्ति , हर हाथ तरक्की पर भाजपा का नारा ''अबकी बार मोदी सरकार'' और ''सबका साथ सबका विकास'' भारी पड़ा। 2014 के लोकसभा में चुनाव में भाजपा का प्रभावी नारा बना हर-हर मोदी, घर -घर मोदी।

क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टियों द्वारा प्रयुक्त नारें-

क्षेत्रीय नारों में लालू प्रसाद यादव का नारा काफी लोकप्रिय रहा -जब तक रहेगा समोसे में आलू तब तक रहेगा बिहार में लालू। बहुजन समाज पार्टी का नारा तिलक, तराजू और तलवार इनको मारे जूते चार। उत्तर प्रदेश के विधान सभा चुनाव 1993 में बसपा व सपा ने साथ मिलकर चुनाव लड़ा और नारा दिया ''मिले मुलायम काशीराम हवा में उड़ गए जय श्री राम। बसपा द्वारा 2002 में नारा ''ब्राम्हण साफ, ठाकुर हाफ, बनिया माफ'' आगामी चुनाव 2007 में बसपा का नारा था ''हाथी नहीं गणेश है ब्रम्हा विष्णु महेश है। इसी साल समाजवादी पार्टी द्वारा '' चढ़ गुंडों की छाती पर बटन दबा हाथी पर'' नारा दिया। 2012 के चुनाव में बसपा द्वारा प्रभावी नारा था- '' बटन दबेगा हाथी पर बाकि सब बैशाखी पर । 2012 के चुनाव में ही सपा का नारा था ''उम्मीद की साइकिल'' बसपा के नारों पर भारी पड़ी। मध्य प्रदेश के शहडोल जिले से विश्व की प्रथम किन्नर विधायक शबनममौसी बनी । शबनम मौसी के लिए एक ऐतिहासिक नारा जिसने विश्व इतिहास लिखा जब कोई किन्नर विधायक बनी ''कमल नहीं कमला चाहिए , पंजा नहीं छक्का चाहिए।

निष्कर्ष- लोकतान्त्रिक देषों में चुनाव द्वारा ही जनप्रतिनिधी का चयन किया जाता है। इन चुनावों को सफल बनाने में नारों की महत्ता महत्वपूर्ण है। इन नारों के द्वारा जहां मतदाता राजनीतिक रुप से साक्षर होता है वहीं जागरुक होकर राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेता है। जनमत निर्माण की प्रक्रिया में जहां मीडिया जनमत का निर्माण करते है, वहीं जनमत का प्रमुख आधार नारे ही है। इन्हीं नारों के कारण स्वतंत्र व स्वस्थ जनमत निर्माण की प्रक्रिया शुरु होती है इन्ही नारों का जनता को लोकतांत्रिक रुप से षिक्षित व जागरुक करते है। आंदोलन के केन्द्रीयकरण और लोगों के आंदोलन के लिए प्रेरित करने व उनकी सहभागिता

सुनिश्चित करने के लिए जनमत नेता का उद्भव प्रमुख कारण था। नारों ने स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया वहीं ये नारे ऐतिहासिक भी हुए। जनमत का निर्माण करने में नारों ने महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नारों के विकास में समाचारपत्रों एवं प्रेस का राष्ट्रवाद के विकास में योगदान भी अवर्णनीय है। राष्ट्रीय साहित्यों , राजनीतिक एकीकरण, तीव्र परिवहन व संचार साधनों का प्रयोग , बौद्विक पुर्नजागरण व शिक्षा के प्रसार ने नारों के प्रयोग व उनका विस्तार हुआ।

संदर्भ सूची

1. के चौपड़ा, जोगिंदर कुमार - पालिटिक्स ऑफ इलैक्शन रिफार्म इन इंडिया, मित्तल प्रकाशन,2008।
2. फाडिया बीएल और जैन पुखराज, भारतीय प्रशासन एवम् राजनीति, राजपाल एंड संस, दिल्ली 2011।
3. नटराजन जे. भारतीय पत्रकारिता का इतिहास, सूचना व प्रसारण मंत्रालय प्रकाशन विभाग दिल्ली।